प्रकाशन तिथि : 26 अगस्त 2015, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 34, अंक 2, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

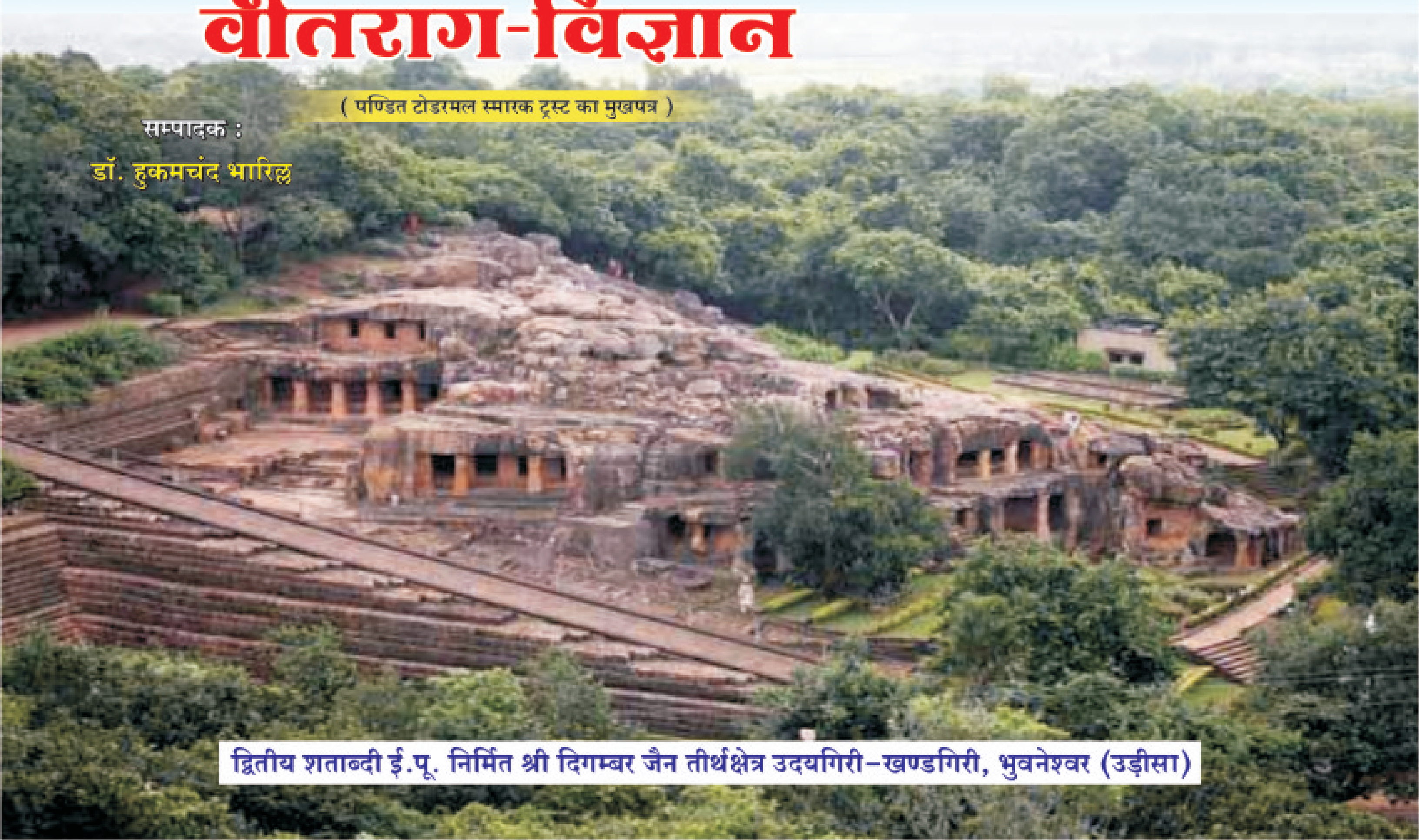

द्वितीय शताब्दी ई.पू. निर्मित श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र उदयगिरी–खण्डगिरी, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

वीतराग-विज्ञान (386)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

फैक्स : 2704127

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10200

सम्यग्दर्शन के पूर्व तत्त्वनिर्णय

रागमिश्रित निर्णय से निर्विकल्प नहीं होता परन्तु निर्विकल्प होने से पूर्व विकल्प से कैसा निर्णय करता है वह कहते हैं। पहले क्या करता है ? कि प्रथम रागमिश्रित विचार से निर्णय करता है कि मैं ज्ञानस्वरूप आत्मा हूँ। सर्वज्ञदेव द्वारा कहे गये परमागम से निर्णय करता है कि ज्ञान सो मैं हूँ। गुरु के पास सुनकर निर्णय करता है कि ज्ञान सो मैं हूँ। अभी सम्यग्दर्शन नहीं हुआ है परन्तु सम्यग्दर्शन प्रगट करना है ऐसी उत्कंठावान आँगन में खड़ा हुआ जीव प्रथम ऐसा निर्णय करता है कि दया-दान के भाव विकार हैं, वह मेरा स्वरूप नहीं है। मैं तो ज्ञानस्वभाव आत्मा हूँ, अनादि-अनंत ज्ञातास्वभावी हूँ, - ऐसा विकल्प वह भी मैं नहीं हूँ। मैं ज्ञानस्वभावी आत्मा हूँ। प्रथम विकल्प द्वारा ऐसा निर्णय करता है। 262

- द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर, पृष्ठ 60-61

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 34 (वीर नि. संवत् - 2541) 386 अंक : 2

विराजै 'रामायण' घटमाहिं...

विराजै 'रामायण' घटमाहिं।
मरमी होय मरम सो जाने, मूरख मानै नाहिं।।टेक।।
आतम 'राम' ज्ञान गुन 'लछमन', 'सीता' सुमति समेत।
शुभोपयोग 'वानरदल' मंडित, वर विवेक 'रण खेत'।।1।।
ध्यान 'धनुष टंकार' शोर सुनि, गई विषय दिति भाग।
भई भस्म मिथ्यामति 'लंका', उठी धारणा 'आग'।।2।।
जरे अज्ञान भाव 'राक्षसकुल', लरे निकांछित 'सूर'।
जूझे राग-द्वेष सेनापति, संसै 'गढ' चकचूर।।3।।
बिलखत 'कुम्भकरण' भव विभ्रम, पुलकित मन 'दरयाव'।
थकित उदार वीर 'महिरावण', सेतुबंध सम भाव।।4।।
मूर्छित 'मंदोदरी' दुराशा, सजग चरन 'हनुमान'।
घटी चतुर्गति परणति 'सेना', छुटे छपक गुण 'बान'।।5।।
निरखि सकति गुन 'चक्र सुदर्शन' उदय 'विभीषण' दीन।
फिरै 'कबंध' मही 'रावण' की, प्राण भाव शिरहीन।।6।।
इह विधि सकल साधु घट, अन्तर होय सहज 'संग्राम'।
यह विवहार दृष्टि 'रामायण' केवल निश्चय राम।।7।।

- कविवर पण्डित बनारसीदासजी

सम्पादकीय

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे....)

व्रतों के अतिचार

सम्यग्दर्शन के अतिचारों के बाद व्रतों के अतिचारों की चर्चा करते हैं –

व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।।२४।।

बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ।।२५।।

मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः।।२६।।

स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिक मानोन्मान प्रतिरूपकव्यवहाराः ।।२७।।

परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीतागमनानंगक्रीडा कामतीव्राभिनिवेशाः ।।२८।।

क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणाति क्रमाः ।।२९।।

व्रत और शीलों के भी क्रम से पाँच-पाँच अतिचार होते हैं।

बन्ध, वध, छेद, अतिभारारोपण और अन्न-पान (भोजन-पानी) का निरोध – ये अहिंसाणुव्रत के पाँच अतिचार हैं।

मिथ्योपदेश, रहोभ्याख्यान, कूटलेखक्रिया, न्यासापहार और साकारमंत्रभेद – ये सत्याणुव्रत के पाँच अतिचार हैं।

स्तेनप्रयोग, तदाहृतादान, विरुद्धराज्यातिक्रम, हीनाधिकमानोन्मान और प्रतिरूपक व्यवहार – ये अचौर्याणुव्रत के पाँच अतिचार हैं।

परविवाहकरण, अपरिगृहीतइत्वरिकागमन, परिग्रहीतइत्वरिका गमन, अनंगक्रीड़ा और कामतीव्राभिनिवेश – ये ब्रह्मचर्याणुव्रत के पाँच अतिचार हैं।

क्षेत्र-वास्तु, हिरण्य-सुवर्ण, धन-धान्य, दासी-दास और कुप्य (वस्त्र) – इन सबके किये हुए परिमाण को लोभ में आकर बढ़ा लेना

परिग्रहपरिमाणव्रत के अतिचार हैं।

अहिंसाणुव्रत आदि पाँच अणुव्रतों और दिग्व्रत आदि सात शीलव्रतों के भी पाँच-पाँच अतिचार होते हैं।

अब उनका निरूपण आगामी सूत्रों में क्रमशः करते हैं।

(क) अहिंसाणुव्रत के पाँच अतिचार क्रमशः इसप्रकार हैं –

१. बन्ध – प्राणियों को रस्सी से, सांकल से बाँधना; पिंजड़े में बन्द कर देना आदि **बन्ध** नाम का प्रथम अतिचार है।

२. वध – लाठी, डण्डे, कोड़े आदि से पीटना **वध** नाम का द्वितीय अतिचार है।

३. छेद – पूँछ, कान, नाक आदि उपांगों को छेद देना **छेद** नाम का तीसरा अतिचार है।

४. अतिभारारोपण – मजदूरों या पशुओं पर उनकी शक्ति से अधिक भार लाद देना **अतिभारारोपण** नाम का चौथा अतिचार है।

५. अन्नपाननिरोध – अपने आश्रय से रहने वाले नोकर-चाकर एवं पशु-पक्षियों को समय पर पर्याप्त खाना-पीना नहीं देना **अन्न-पाननिरोध** नाम का पाँचवाँ अतिचार है।

(ख) सत्याणुव्रत के पाँच अतिचार क्रमशः इसप्रकार हैं –

१. मिथ्योपदेश – अहितकर और झूठा उपदेश देना, **मिथ्योपदेश** नामक प्रथम अतिचार है।

२. रहोभ्याख्यान – स्त्री और पुरुष के द्वारा एकान्त में की गई क्रिया विशेष को प्रगट कर देना, **रहोभ्याख्यान** नामक दूसरा अतिचारहै।

३. कूटलेखक्रिया – किसी के दवाब में ऐसा आलेख कर देना कि जिससे दूसरा व्यक्ति फंस जावे **कूटलेखक्रिया** नामक तीसरा अतिचार है।

४. न्यासापहार – न्यास का अपहरण कर लेना। तात्पर्य यह है कि कोई व्यक्ति जितनी धरोहर रख गया था, पर भूल से कुछ कम माँगे तो उतनी देकर शेष हड़प जाना, **न्यासापहार** नामक चौथा अतिचार है।

५. साकारमंत्रभेद – किसी की गुप्त बात को उसकी आकृति देखकर या चर्चा-वार्ता से जानकर उसे प्रगट कर देना, **साकारमंत्रभेद** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

(ग) अचौर्याणुव्रत के पाँच अतिचार क्रमश: इसप्रकार हैं –

१. स्तेनप्रयोग – चोरी करने की प्रेरणा देना, चोरी करवाना और करनेवाले की अनुमोदना करना **स्तेनप्रयोग** नामक प्रथम अतिचार है।

२. तदाहृतादान – चोरी का माल खरीदना **तदाहृतादान** नामक दूसरा अतिचार है।

३. विरुद्धराज्यातिक्रम – राजनियम के विरुद्ध कार्य करना **विरुद्ध राज्यातिक्रम** नामक तीसरा अतिचार है।

४. हीनाधिकमानोन्मान – नापने-तौलने के मीटर और बाँट लेने-देने के अलग-अलग रखना **हीनाधिकमानोन्मान** नामक चौथा अतिचार है।

५. प्रतिरूपक व्यवहार – जाली नोट छापना या खरी-खोटी वस्तुओं को मिलाना, मिलाकर बेचना **प्रतिरूपक व्यवहार** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

(घ) ब्रह्मचर्याणुव्रत के पाँच अतिचार क्रमश: इसप्रकार हैं –

१. परविवाहकरण – ब्रह्मचर्याणुव्रत के धारी को अपनी संतानों का शादी-विवाह करना तो आवश्यक है, उसका उत्तरदायित्व है; पर वह अपने से संबंधित व्यक्तियों को छोड़कर अन्य लोगों के विवाह कार्यों में नहीं उलझता। यदि उलझे तो उसके ब्रह्मचर्याणुव्रत में दोष लगता है। यह दोष ब्रह्मचर्याणुव्रत का पहला अतिचार है।

२-३. इत्वरिकागमन – व्यभिचारिणी स्त्री को इत्वरिका कहते हैं। इत्वरिकायें दो प्रकार की होती हैं –

(i) जिसका कोई स्वामी न हो, पति न हो; ऐसी इत्वरिका (वेश्या) को **अपरिग्रहीत इत्वरिका** कहते हैं।

(ii) जिसका स्वामी हो, पति हो; उस इत्वरिका को **परिग्रहीत इत्वरिका** (चरित्रहीन परस्त्री) कहते हैं।

उनमें से परिग्रहीत इत्वरिका (चरित्रहीन परस्त्री) के घर आना-जाना **परिग्रहीत इत्वरिका गमन** नामक दूसरा अतिचार है और अपरिग्रहीत इत्वरिका (वेश्या) के घर आना-जाना **अपरिग्रहीत इत्वरिका गमन** नामक तीसरा अतिचार है।

४. अनंगक्रीड़ा – कामसेवन के अंगों को छोड़कर अन्य अंगों से रति करना **अनंगक्रीड़ा** नामक चौथा अतिचार है।

५. कामतीव्राभिनिवेश – कामसेवन की अत्यन्त तीव्र लालसा **कामतीव्राभिनिवेश** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ङ. परिग्रहपरिमाणाणुव्रत के पाँच अतिचार इसप्रकार हैं –

१. क्षेत्र-वास्तु प्रमाणातिक्रम – खेत और मकानों की जो मर्यादा ली थी, उसे बढ़ा लेना **क्षेत्र-वास्तु प्रमाणातिक्रम** नामक प्रथम अतिचार है।

२. हिरण्य-सुवर्ण प्रमाणातिक्रम – चाँदी-सोने की मर्यादा को बढ़ा लेना **हिरण्य-सुवर्ण प्रमाणातिक्रम** नामक दूसरा अतिचार है।

३. धन-धान्य प्रमाणातिक्रम – पशु धन आदि धन और अनाज की मर्यादा को बढ़ा लेना **धन-धान्य प्रमाणातिक्रम** नामक तीसरा अतिचार है।

४. दासी-दास प्रमाणातिक्रम – नौकर-नौकरानी संबंधी मर्यादा को बढ़ा लेना **दासी-दास प्रमाणातिक्रम** नामक चौथा अतिचार है।

५. कुप्यादि प्रमाणातिक्रम – बर्तनों और सूती, ऊनी, रेशमी आदि वस्त्रों की ली हुई मर्यादा को बढ़ा लेना **कुप्य प्रमाणातिक्रम** नामक पाँचवाँ अतिचार है।।२४-२९।।

शीलव्रतों में गुणव्रतों के अतिचार

सम्यक्त्व और व्रतों के अतिचार बता देने के उपरान्त अब सात शीलव्रतों में से तीन गुणव्रतों के अतिचार बताते हैं –

ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ।।३०।।

आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ।।३१।।

कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोग

परिभोगानर्थक्यानि ।।३२।।

ऊर्ध्वातिक्रम, अधोऽतिक्रम, तिर्यगतिक्रम, क्षेत्र-वृद्धि और स्मृत्य-न्तराधान – ये पाँच दिग्विरति व्रत के अतिचार हैं।

आनयन, प्रेष्यप्रयोग, शब्दानुपात, रूपानुपात और पुद्गलक्षेप – ये पाँच देशविरति व्रत के अतिचार हैं।

कन्दर्प, कौत्कुच्य, मौखर्य, असमीक्ष्याधिकरण और उपभोग-

परिभोगानर्थक्य – ये पाँच अनर्थदण्डविरति व्रत के अतिचार हैं।

दिशाओं संबंधी परिमित मर्यादा के उल्लंघन को **अतिक्रम** कहते हैं। वह तीन प्रकार का होता है – ऊर्ध्वातिक्रम, अधो-अतिक्रम और तियगतिक्रम।

दिग्व्रतनामक गुणव्रत में –

१. ऊर्ध्वातिक्रम – जितनी ऊँचाई तक जाने की मर्यादा ली हो, उससे ऊपर चले जाना, **ऊर्ध्वातिक्रम** नामक प्रथम अतिचार है।

२. अधो-अतिक्रम – जितनी गहराई में नीचे जाने की मर्यादा ली हो, उससे अधिक नीचे चले जाना, **अधो-अतिक्रम** नामक दूसरा अतिचार है।

३. तिर्यगतिक्रम – जितनी दूर तक तिरछे जाने की मर्यादा लीहो, उससे अधिक तिरछे चले जाना, **तिर्यगतिक्रम** नामक तीसरा अतिचारहै।

४. क्षेत्रवृद्धि – उक्त तीनों मर्यादाओं में क्षेत्र बढ़ा लेना, **क्षेत्रवृद्धि** नामक चौथा अतिचार है।

५. स्मृत्यन्तराधान – की हुई मर्यादा को भूल जाना, **स्मृत्यन्तराधान** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ये पाँच दिग्व्रत नामक गुणव्रत के अतिचार हैं।

देशव्रतनामक गुणव्रत में –

१. आनयन – जितनी मर्यादा ली हो, उससे बाहर के क्षेत्र की वस्तु को बाहर से मंगवाना, **आनयन** नामक प्रथम अतिचार है।

२. प्रेष्यप्रयोग – मर्यादा के बाहर के क्षेत्र में किसी को भेजकर काम करा लेना, **प्रेष्यप्रयोग** नामक दूसरा अतिचार है।

३. शब्दानुपात – मर्यादा के बाहर अपने शब्दों को भेजकर अर्थात् आवाज देकर काम कराना, **शब्दानुपात** नामक तीसरा अतिचार है।

४. रूपानुपात – मर्यादा के बाहर अपना रूप दिखाकर काम कराना, **रूपानुपात** नामक चौथा अतिचार है।

५. पुद्गलक्षेप – मर्यादा के बाहर पत्थर फेंककर काम कराना, **पुद्गलक्षेप** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ये पाँच देशव्रत नामक गुणव्रत के अतिचार हैं।

अनर्थदण्डव्रत नामक गुणव्रत में –

१. कन्दर्प – राग की अधिकता के कारण हास्य के साथ अशिष्ट वचन बोलना, **कन्दर्प** नामक प्रथम अतिचार है।

२. कौत्कुच्य हास्य और अशिष्ट वचनों के साथ शरीर से कुचेष्टा करना, **कौत्कुच्य** नामक दूसरा अतिचार है।

३. मौखर्य – धृष्टतापूर्वक बहुत वकवाद करना, **मौखर्य** नामक तीसरा अतिचार है।

४. असमीक्ष्याधिकरण – बिना सोचे-समझे अधिक प्रवृत्ति करना, **असमीक्ष्याधिकरण** नामक चौथा अतिचार है।

५. उपभोग-परिभोग-अनर्थक्य – जितनी उपभोग और परिभोग सामग्री से काम चल सकता हो; उससे अधिक सामग्री को जोड़ना, संग्रह करना **उपभोग-परिभोग-अनर्थक्य** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ये पाँच अनर्थदण्डव्रत नामक गुणव्रत के अतिचार हैं।।३०-३२।।

शीलव्रतों में शिक्षाव्रतों के अतिचार

सात शीलव्रतों तीन गुणव्रतों की चर्चा के उपरान्त अब चार शिक्षाव्रतों के अतिचारों की चर्चा करते हैं; जो इसप्रकार हैं –

योगदुःप्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि।।३३।।

अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादर स्मृत्यनुपस्थानानि।।३४।।

सचित्तसम्बन्धसंमिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः।।३५।।

सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्य्यकालातिक्रमाः।।३६।।

कायदुष्प्रणिधान, वाग्दुष्प्रणिधान, मनोदुष्प्रणिधान, अनादर और स्मृत्यनुपस्थान – ये पाँच सामायिक व्रत के अतिचार हैं।

अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित उत्सर्ग, अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित आदान, अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित संस्तरोपक्रमण, अनादर और स्मृत्यनुपस्थान – ये पाँच प्रोषधोपवास व्रत के अतिचार हैं।

सचित्त आहार, सचित्त संबंध आहार, सचित्त-सम्मिश्र आहार,

अभिषव आहार और दुष्पक्व आहार – ये पाँच भोगोपभोगपरिमाण व्रत के अतिचार हैं।

सचित्त निक्षेप, सचित्त अपिधान, परव्यपदेश, मात्सर्य और कालातिक्रम – ये पाँच अतिथिसंविभाग व्रत के अतिचार हैं।

श्रावकों के उन व्रतों को शिक्षाव्रत कहते हैं; जो श्रावकों को मुनिधर्म की शिक्षा दें। सामायिक, प्रोषधोपवास आदि मूलत: मुनिराजों के व्रत हैं; मुनिधर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अभ्यास के रूप में व्रती श्रावक भी इन व्रतों का अपनी शक्ति के अनुसार पालन करते हैं।

१. कायदुष्प्रणिधान – सामायिक करते समय शरीर का निश्चल न रहना, **कायदुष्प्रणिधान** नामक प्रथम अतिचार है।

२. वाग्दुष्प्रणिधान – सामायिक के मंत्र को अशुद्ध और जल्दी-जल्दी बोलना, **वाग्दुष्प्रणिधान** नामक दूसरा अतिचार है।

३. मनोदुष्प्रणिधान – सामायिक में मन का न लगना, **मनो दुष्प्रणिधान** नामक तीसरा अतिचार है।

४. अनादर – अनादरपूर्वक सामायिक करना, **अनादर** नामक चौथा अतिचार है।

५. स्मृत्यनुपस्थान – चित्त की चंचलता से मंत्र या पाठ वगैरह को भूल जाना, **स्मृत्यनुपस्थान** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ये पाँच सामायिक शिक्षाव्रत के अतिचार हैं।

अब प्रोषधोपवास व्रत के अतिचारों की चर्चा करते हैं –

१. अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित उत्सर्ग – बिना देखे और बिना साफ किये मल-मूत्र क्षेपण करना, **अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित उत्सर्ग** नामक प्रथम अतिचार है।

२. अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित आदान – इसीप्रकार बिना देखे, बिना शोधे पूजन की सामग्री एवं स्वयं के वस्त्रादि रखना, उठाना, बिछाना, **अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित आदान** नामक दूसरा अतिचार है।

३. अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित संस्तरोपक्रमण – बिना देखी, बिना शोधी जमीन पर चटाई वगैरह बिछाना, **अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित संस्तरोपक्रमण** नामक तीसरा अतिचार है।

४. अनादर – उपवास के कारण भूख-प्यास से पीड़ित होने से आवश्यक क्रियाओं में उत्साह न होना, **अनादर** नामक चौथा अतिचारहै।

५. स्मृत्यनुपस्थापन – आवश्यक क्रियाओं को भूल जाना, **स्मृत्यनुपस्थापन** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ये पाँच प्रोषधोपवास नामक व्रत के अतिचार हैं।

अब भोगोपभोग परिमाणव्रत के अतिचारों की चर्चा करते हैं।

१. सचित्त आहार – सचेतन पुष्प, पत्ते, फल वगैरह का खाना **सचित्ताहार** नामक प्रथम अतिचार है।

२. सचित्त संबंध आहार – सचित्त से संबंधित वस्तु का खाना **सचित्त संबंधाहार** नामक दूसरा अतिचार है।

३. सचित्त-सम्मिश्र आहार – सचित्त से मिश्रित वस्तु का खाना **सचित्त-सम्मिश्राहार** नामक तीसरा अतिचार है।

४. अभिषव आहार – इन्द्रिय को मद करनेवाली वस्तु को खाना **अभिषव आहार** नामक चौथा अतिचार है।

५. दुष्पक्व आहार – ठीक से नहीं पके हुए भोजन को करना **दुष्पक्वाहार** नामक पाँचवाँ अतिचार है।

इसप्रकार के आहार से इन्द्रियाँ प्रबल हो सकती हैं, उत्तेजित हो सकती हैं, शरीर में रोग हो सकता है, जिससे भोगोपभोग परिमाण व्रत में बाधा खड़ी हो सकती है।

ये भोगोपभोग परिमाण नामक व्रत के अतिचार हैं।

अब अतिथिसंविभाग व्रत के अतिचारों की चर्चा करते हैं।

१. सचित्त निक्षेप – सचित्त कमल के पत्ते वगैरह पर रखे हुए आहार का दान देना **सचित्त निक्षेप** नामक प्रथम अतिचार है।

२. सचित्त अपिधान – सचित्त पत्ते वगैरह से ढके हुए आहार को देना **सचित्त अपिधान** नामक दूसरा अतिचार है।

३. परव्यपदेश – दान स्वयं न देकर दूसरों से दिलवाना अथवा दूसरों के द्रव्य को स्वयं देना **परव्यपदेश** नामक तीसरा अतिचार है।

४. **मात्सर्य –** आदरपूर्वक दान न देना अथवा अन्य दातारों से ईर्ष्या करना **मात्सर्य** नामक चौथा अतिचार है।

५. **कालातिक्रम –** समय पर आहार न देना कालातिक्रम नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ये पाँच अतिथिसंविभाग नामक व्रत के अतिचार हैं।

इसप्रकार ये सात शीलव्रतों में से चार शिक्षाव्रतों के अतिचार हैं ।।३३-३६।।

सल्लेखना के अतिचार

पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतों के उपरान्त अब सल्लेखना व्रत के अतिचारों की चर्चा करते हैं; जो इसप्रकार हैं –

जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि ।।३७।।

जीविताशंसा, मरणाशंसा, मित्रानुराग, सुखानुबंध और निदान – ये पाँच सल्लेखना के अतिचार हैं।

१. **जीविताशंसा –** सल्लेखना लेकर जीने की इच्छा रखना, जीविताशंसा नामक प्रथम अतिचार है।

२. **मरणाशंसा –** रोगादि के कष्ट से घबड़ा कर जल्दी मरने की इच्छा होना, मरणाशंसा नामक दूसरा अतिचार है।

वैसे तो प्रत्येक आत्मार्थी मुमुक्षु भाई-बहिन की भावना ऐसी होना चाहिए या होती है कि –

लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।[१]

सल्लेखना लेनेवाले को तत्काल मरने और अपरिमित काल तक जीने के लिए तैयार रहना ही चाहिए।

३. **मित्रानुराग –** मित्रों के साथ अनुराग होना, उन्हें बार-बार याद करना, मित्रानुराग नामक तीसरा अतिचार है।

४. **सुखानुबंध –** भोगे हुए सुखों को याद करना, सुखानुबंध नामक चौथा अतिचार है।

५. **निदान –** आगे के भोगों की चाह होना, निदान नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ये सल्लेखना व्रत के पाँच अतिचार हैं ।।३७।। **(क्रमश:)**

१. जुगलकिशोरजी मुख्त्यार : मेरी भावना, छन्द ७

छहढाला प्रवचन

सम्यग्ज्ञान की महिमा

कोटि जन्म तप तपैं ज्ञान बिन कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिन मांहि त्रिगुप्ति तैं सहज टरैं ते।।
मुनिव्रत धार अनन्त बार ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतम ज्ञान बिना सुख लेश न पायौ।।५।।
तातैं जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजै।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपौ लख लीजै।।
यह मानुष पर्याय सुकुल, सुनिवौ जिनवानी।
इह विधि गये न मिलै, सुमणि ज्यों उदधि समानी।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

आत्मा शुद्ध ज्ञानानन्द स्वरूप है, उसके ज्ञान बिना राग में खड़े रहकर जीव अनन्त काल से जो कुछ भी आचरण करता आ रहा है, उसमें वह दु:खी ही हुआ है। संसार परिभ्रमण के अनन्त अवतार में मनुष्य भव तो कभी-कभी ही मिलता है, ऐसा मनुष्य भव पाकर भी अज्ञान से जीव ने उसे गंवा दिया। जीव ने अनन्तबार मनुष्यपना पाया और उसमें अनेक भव में दिगम्बर मुनि होकर महाव्रत पाले, शास्त्र पठन किया, देव-गुरु-धर्म की व्यवहार श्रद्धा भी की, परन्तु इतना करने पर भी उसे आनन्द क्यों नहीं आया ? और उसका भव-भ्रमण क्यों नहीं मिटा ? तो कहते हैं कि सभी पराश्रित भावों से पार चैतन्य तत्त्व आत्मा स्वयं कौन है ? यह उसने स्व सन्मुख होकर कभी नहीं जाना, इसलिए आत्मज्ञान बिना लेशमात्र भी सुख प्राप्त नहीं हुआ और भव-भ्रमण का दु:ख भी नहीं मिटा। वह ऊँचे स्वर्गों में भी गया; परन्तु स्वर्ग में जाने से सुख नहीं मिल जाता। सुख नहीं हुआ अर्थात् धर्म नहीं हुआ और धर्म होने पर तो आत्मा के सुख का वेदन होगा ही, जहाँ सुख नहीं वहाँ धर्म नहीं और आत्मा के ज्ञान बिना सुख नहीं।

आत्मा को जाना नहीं और आत्मा से बाहर रहकर, परभाव में-राग में रहकर, जीव ने अनन्त बार मनुष्य भव गंवाया। यदि चैतन्य स्वभाव के सम्मुख हो तो महान सुख क्षणमात्र में हो जाय और कर्म टलकर संसार का किनारा दिखाई पड़ जाय। पुण्य से कभी संसार का अन्त नहीं आता और सुख का अंश भी नहीं मिलता, सम्यग्ज्ञान से ही संसार का अन्त आकर अपूर्व अलौकिक सुख प्राप्त होता है।

विषय-कषायरूप पाप के अशुभभावों में भव गंवाये अथवा कुगुरु-कुदेव के सेवन में जीवन गंवावे, उसकी तो यहाँ बात ही नहीं है। यहाँ तो कहते हैं कि सच्चे वीतराग देव-गुरु को ही माने, अन्य को न माने, विषय-कषाय के पापभाव छोड़कर व्रत-शीलादि के शुभभाव में लवलीन रहे और उसमें ही सन्तोष माने कि इसी से अब मोक्ष हो जायेगा, परन्तु यदि उन व्रतादि के शुभराग से पार ज्ञान-चेतना का अनुभव न करे तो वह जीव भी सुख नहीं प्राप्त कर सकता। वह स्वर्ग में जाता है; परन्तु इससे क्या लाभ है ? सुख तो राग रहित चैतन्य परिणति में है, स्वर्ग के वैभव में सुख नहीं है।

यह किसकी बात है ? तेरी अपनी ही बात है। बापू ! तू स्वयं ज्ञान चेतनास्वरूप है। ज्ञानचेतना स्वयं परमसुख में निमग्न है, ऐसी ज्ञान चेतना के अनुभव बिना तू अनन्त बार शुभभाव कर चुका है। शुभ के साथ अज्ञान पड़ा है अर्थात् राग में सर्वस्व मानकर राग रहित सम्पूर्ण ज्ञानस्वभाव का तू अनादर कर रहा है। सम्यग्ज्ञान बिना राग में सुख कहाँ से होगा? शुभराग में ऐसी शक्ति नहीं कि अज्ञानरूपी अन्धकार अथवा दु:ख को दूर कर सके। ज्ञान वस्तु राग से भिन्न है, उस ज्ञानचेतना के प्रकाश से ही अज्ञानान्धकार टलता है और सुख प्रकट होता है। निजानन्दी ज्ञानस्वरूप आत्मा की तरफ झुककर सम्यग्ज्ञान चेतना प्रकट किए बिना सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

अतीन्द्रिय आनन्द का पिण्ड आत्मा स्वयं है। राग में किंचित् भी सुख नहीं है। राग में से अथवा कहीं बाह्य में से सुख लेना चाहे तो सुख की सत्ता आत्मा में है – इसका अस्वीकार हो जाता है। अरे, जहाँ सुख है, जो स्वयं सुखस्वरूप है, उसका स्वीकार किए बिना सुख कहाँ से और कैसे होगा ?

प्रश्न – शुभराग में सुख भले न हो परन्तु दु:ख तो नहीं है ?

उत्तर – अरे भाई ! इसमें आकुलता रूपी दु:ख ही है। जड़ में तो सुख-दु:ख का अनुभव है नहीं, चैतन्य तत्त्व अपने ज्ञानस्वभाव से सुख का वेदन करता है और अज्ञानभाव से दु:ख का वेदन करता है। भेदज्ञान सिद्ध सुख का कारण है और भेदज्ञान का अभाव अर्थात् अज्ञान संसार-दु:ख का कारण है। जहाँ चैतन्य के ज्ञान की शान्ति का वेदन नहीं, वहाँ कषाय है। भले अशुभ हो या शुभ हो, परन्तु जो कषाय है वह तो दु:ख ही है। शुभ कषाय को शान्ति तो नहीं कह सकते। आत्मा के ज्ञान से क्षणमात्र में करोड़ों भव के कर्म छूट जाते हैं और सम्यग्ज्ञान बिना करोड़ों वर्ष के तप से भी सुख का अंश भी नहीं मिलता। देखो तो सही, ज्ञान की अपार महिमा! अज्ञानी जीव को ज्ञान की महिमा की खबर नहीं है, उसे राग दिखाई पड़ता है, किन्तु राग से पार होकर अन्दर चैतन्यमय महिमावन्त ज्ञान उसे दिखाई नहीं पड़ता। अत: कहते हैं कि हे भाई ! मोक्ष का कारण तो सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान सहित का चारित्र है। सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान बिना तो आचरण थोथा है, उसमें लेश भी सुख नहीं है। इसप्रकार सम्यग्ज्ञान की महिमा जानकर उसे परम अमृतरूप जानकर उसका सेवन करो।

यह रत्नचिन्तामणि जैसी मनुष्य पर्याय पाकर तथा जिनवाणी का श्रवण करके, हे जीवों ! तुम इस दुर्लभ सम्यग्ज्ञान का अभ्यास करो और आत्मा को पहिचान लो – ऐसा अब अग्रिम छन्द में कहेंगे।

सम्यग्ज्ञान ही सुख का कारण है – ऐसा जानकर, उस सम्यग्ज्ञान के लिए जिनेन्द्र भगवान द्वारा कहे हुए तत्त्व का अभ्यास करो और संशय-विभ्रम-विमोह छोड़कर आत्मा का स्वरूप पहिचान लो।

ऐसा मनुष्य अवतार, उत्तम, कुल, जिनवाणी के श्रवण का सुयोग बारबार मिलना कठिन है। यदि सम्यग्ज्ञान बिना इस अवसर को गंवा दिया तो जिसप्रकार समुद्र में डूबा हुआ उत्तम मणि फिर से प्राप्ति करना कठिन है, उसीप्रकार इस भव समुद्र में मनुष्य अवतार और जिनवाणी का श्रवण करने के लिए पुन: अवकाश मिलना अत्यन्त कठिन है। **(क्रमश:)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन –

प्रतिष्ठापना समिति का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 65वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

पासुगभूमिपदेसे गूढे रहिए परोपरोहेण।
उच्चारादिच्चागो पइट्ठासमिदी हवे तस्स ।।६५ ।।

(हरिगीत)

प्रतिष्ठापन समिति में उस भूमि पर मल मूत्र का।
क्षेपण करें जो गूढ प्रासुक और हो अवरोध बिन ।।६५।।

परोपरोध से रहित, गूढ, प्रासुक भूमिप्रदेश में इसप्रकार मल-मूत्र का त्याग करना कि उससे किसी जीव का घात न हो, प्रतिष्ठापना समिति है।

(गतांक से आगे....)

मुनियों के कायमलादि त्याग के स्थान की शुद्धि का कथन प्रतिष्ठापन समिति में है। आत्मा के भानसहित मुनिदशा में उठते हुए शुभविकल्प की यह बात है। यह व्यवहार समिति है।

छठी-सातवीं भूमिका में झूलते मुनि, जहाँ किसी के द्वारा रोक-टोक न हो, जो गुप्त हो, और जहाँ त्रसादि जन्तुओं का संचार न हो; ऐसे प्रासुक भूमिप्रदेश में मलादि का त्याग करते हैं, उनके प्रतिष्ठापन समिति होती है।

शुद्धनिश्चय से जीव को देह का अभाव होने से आहारग्रहणरूप परिणति नहीं है। वास्तव में आत्मा को शरीर नहीं है, इसलिए अन्न ग्रहण करूँ ऐसा विकल्प भी आत्मा में नहीं है। आहार लेने की – जड़ की क्रिया में सावधान तो रहें न? – ऐसा प्रश्न होने पर उत्तर देते हैं कि भाई! जड़ की क्रिया में आत्मा कर ही क्या सकता है कि उसमें सावधान रहे? आत्मा पर का कुछ भी नहीं कर सकता – यह बात सर्वप्रथम श्रद्धा में होना चाहिये। श्रद्धा-ज्ञान होने के बाद मुनिदशा में कैसा राग होता है उसका यहाँ ज्ञान कराया है।

आहार ग्रहण करूँ – ऐसा राग ही मेरे स्वरूप में नहीं है, इसप्रकार का भान प्रथम से ही मुनि को होता है। यह समितियाँ मुनि को सर्वांश और आत्मज्ञानी श्रावक को अल्पांश में होती हैं – ऐसा समझना चाहिए।

मुनि को स्वभावदृष्टि प्रकट हुई है, स्वरूपरमणता विशेष हो गई है, अल्पराग है अतः विकल्प उठता है – काय आदि के मलत्याग की वृत्ति उठती है। जन्तुरहित और पर के उपयोगरहित स्थान में मुनि को मल के त्याग का विकल्प होता है – वह व्यवहारप्रतिष्ठापन समिति है।

मुनि छद्मस्थ हैं इसलिए उन्हें आहार और निहार होता है, यहाँ सामान्य मुनि की बात समझना। छद्मस्थ तीर्थंकर भगवान को यद्यपि आहार होता है तथापि निहार जन्म से ही नहीं होता। केवलज्ञान होने के बाद तो सामान्य केवली हों अथवा तीर्थंकर भगवान हों – किन्हीं को भी आहार और निहार दोनों ही नहीं होते।

मुनि को किंचित् राग है, अतः शरीरसम्बन्धी विकल्प उठता है और आहारग्रहण होता है तथा मलत्याग भी होता है। मलत्याग की बात जिनको लागू पड़े वहाँ लेना, सबके लिये नहीं। महावीर आदि तीर्थंकर मुनियों को जन्म से ही निहार नहीं था। कितने ही महाऋद्धिधारी मुनिराज होते हैं उन्हें ऋद्धि के निमित्त से सम्पूर्ण आहार रक्तादिरूप में परिणम जाता है और मल-मूत्र नहीं बनता, फलस्वरूप निहार भी नहीं होता। अतः यह कथन एकान्त सभी मुनियों के लिए मत समझना, जिस पर लागू हो उसी पर समझना।

जन्तुरहित तथा पर की रोक-टोक से रहित स्थान में शरीरधर्म – मलत्याग की क्रिया करके फिर परमसंयमी मुनि उस स्थान से उत्तर दिशा में कुछ कदम चलकर उत्तरमुख खड़े रहकर, मन-वचन-काय की क्रियाओं का लक्ष छोड़कर, प्रतिष्ठापनसमिति के शुभविकल्प को भी छोड़कर, निजात्मा को अव्यग्र होकर – एकाग्र होकर ध्याते हैं। प्रतिष्ठापनसमिति का विकल्प व्यवहारसमिति है और उसे तोड़कर स्वरूप में लीन होना निश्चयसमिति है।

मुनि तीनों काल नग्न दिगम्बर ही होते हैं। जिसको आत्मा का यथार्थ भान होकर वीतरागदशा प्रकटी हो, जिसको आसक्ति घटकर विशेष स्वरूपस्थिरता हुई हो, वह वीतरागमार्ग में चलनेवाला मुनि है – ऐसा मुनिपना ही वीतरागमार्ग है।

इसके अलावा वस्त्र-पात्रसहित मुनिपना मनानेवाले तथा पुण्यादि में धर्म मनानेवाले तो वीतरागमार्ग से विरोधी मार्गवाले हैं, संसार में परिभ्रमण के कारण हैं, उनके द्वारा धर्म या आत्मशान्ति प्रकट होनेवाली नहीं।

जिनके शरीर की दशा नग्न है, अन्तर-आत्मभान सहित छठे गुणस्थान की वीतरागदशा प्रकटी है, उनको मलत्याग का विकल्प उठता है, और मलत्याग के बाद उत्तरदिशा में कुछ कदम चलकर, उत्तरमुख खड़े रहकर संसार के कारणभूत पुण्य-पाप का लक्ष छोड़कर चैतन्य आनन्दकन्द स्वरूप में ठहर जाते हैं – इसका नाम निश्चयसमिति है। संसार के निमित्तभूत मन का – विचार के निमित्त का लक्ष छोड़कर मात्र चैतन्यस्वरूप का अनुभव रह जाय वह कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग में संसार की कारणभूत काया की क्रिया के ऊपर लक्ष नहीं, वचन बोलने का लक्ष नहीं, तथा दया-दान, पुण्य-पाप के विकल्परूप मन के परिणाम जो संसार के कारण हैं – उनका लक्ष नहीं होता। जो मन-वाणी-देह के ऊपर का लक्ष छोड़कर, आत्मा में अव्यग्रपने एकाग्र होकर निजानन्द चैतन्यस्वभाव को ध्याता है उस मुनि को कायोत्सर्ग है। इसप्रकार आत्मा का ज्ञान करके मन-वचन-काय का लक्ष छोड़कर, मलत्यागादि के विकल्प त्यागकर भगवान चैतन्य में – वीतरागी स्वभाव में ठहर जाना प्रतिष्ठापन समिति है।

अथवा पुनः पुनः शरीर का अशुचिपना सर्व तरफ से भाना प्रतिष्ठापनसमिति कही जाती है। यह शरीर विष्टा का साँचा है, दाल-भात-रोटी की विष्टा अन्य किसी साँचे से नहीं बनती। यह शरीर ही ऐसा है कि उसमें महादुर्गंधमय विष्टा आदि होते हैं वे बाह्य-अभ्यन्तर अशुचिमय ही हैं – इस भाँति शरीर का अशुचिपना विचारना – भाना वह मुनि की वास्तव में प्रतिष्ठापनसमिति है। यह समिति निर्ग्रंथ आत्मज्ञानी भावलिंगी मुनि के ही होती है, अन्य स्वच्छंद वृत्तिवाले यतिनामधारियों के कोई समिति नहीं होती। वस्त्र-पात्र सहित मुनिपना माने वह स्वच्छंदी मिथ्यादृष्टि है – अथवा आत्मभानरहित मात्र नग्न यतिनामधारी हो उसके भी यह समिति नहीं होती।

भगवान पद्मप्रभमलधारिदेव कहते हैं कि ऐसी दशा जिसके प्रकट हुई है उसी के यथार्थ मुनिपना होता है, अन्य किसी के मुनिपना भगवान ने स्वीकार नहीं किया। आजकल तो बहुत फेर-फार हो गया है, वह वस्तु का स्वरूप नहीं है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : क्या यह सोनगढ़ में निर्मित परमागम मंदिर आदि किसी जीव के किये बिना स्वयं ही बन गए हैं ?

उत्तर : पुद्गल ही अपने स्वकाल में परिणमन करके परमागम मंदिर आदि रूप से हुए हैं, जीव ने उन्हें कुछ भी किया नहीं है। जीव ने तो अपने में शुभभाव किया था; परन्तु उससे हुआ नहीं है। परमाणु ही स्वतन्त्ररूपेण कर्त्ता होकर परमागम मन्दिर आदि कार्यरूप हुए हैं।

प्रश्न : क्या केवलज्ञानावरणी कर्म में इतनी शक्ति है कि केवलज्ञान को न होने दे ? अथवा केवलज्ञान को रोके रखे ?

उत्तर : कर्म तो आत्मा से भिन्न वस्तु है। केवलज्ञानावरणी कर्म केवलज्ञान को रोकता नहीं है। वहाँ तो कर्म परमाणु के परिणमन की उत्कृष्ट शक्ति कितनी है, वह बताने के लिऐ – केवलज्ञानावरणी कर्म से केवलज्ञान उत्पन्न नहीं हो पाता – ऐसा निमित्त से कथन किया है; परन्तु केवलज्ञान कहीं उस कर्म के कारण रोका नहीं जाता है। जब जीव अपनी शक्ति की हीनपरिणमनरूप योग्यता से परिणमन करता है, तब कर्म को निमित्त कहा जाता है।

प्रश्न : अज्ञानी को तो निमित्त वास्तव में ज्ञेय भी नहीं है – ऐसा आप कहते हैं – वह कैसे ?

उत्तर : ज्ञान बिना ज्ञेय किसका ? जैसे लोकालोक तो सदा से है; किन्तु जब केवलज्ञान प्रकट हुआ तब लोकालोक ज्ञेय हुआ। केवलज्ञान होने से पहले लोकालोक ज्ञेय नहीं था; परन्तु स्वाश्रय से केवलज्ञान प्रगट होने पर लोकालोक ज्ञेय हुआ। उसीप्रकार निचलीदशा में भी यद्यपि रागादि और निमित्त वास्तव में ज्ञेय ही हैं, किन्तु सचमुच में उन्हें ज्ञान का ज्ञेय तब कहा जाये, जब कि 'मैं उन राग और

निमित्तों से भिन्न हूँ' - इसप्रकार स्वसन्मुख होकर आत्मा का ज्ञान प्रगट करे तथा राग और निमित्त को परज्ञेयरूप से यथार्थ जाने।

रागादि और निमित्त, ज्ञान के कर्त्ता तो नहीं है; परन्तु वास्तव में अज्ञानी को वे ज्ञान के ज्ञेय भी नहीं है; क्योंकि वहाँ स्वाश्रितज्ञान विकसित ही नहीं हुआ; अत: वह ज्ञान, राग में ही एकाकार रहने से, उसमें राग को ज्ञेय करने की शक्ति प्रगट नहीं हुई। राग से भिन्न पड़े बिना राग को ज्ञेय करने की शक्ति ज्ञान में प्रगट नहीं होती। राग और निमित्त से भिन्न आत्मस्वभाव को जाने बिना राग को रागरूप और निमित्त को निमित्तरूप जानेगा कौन ? जाननेवाला ज्ञान तो राग और निमित्त की रुचि में अटका पड़ा है। राग और निमित्त की रुचि टले बिना और आत्मा की तरफ की रुचि किये बिना निमित्त और व्यवहार का सच्चा ज्ञान नहीं होता। जब स्वाश्रय से ज्ञानस्वभाव की प्रतीति करके ज्ञानस्वभाव को ही स्वज्ञेय किया, तब स्वपर-प्रकाशक ज्ञान सामर्थ्य विकसित हुई और निमित्तादि भी उसके व्यवहार से ज्ञेय हुये।

प्रश्न : अरहंत के द्रव्य-गुण-पर्याय को प्रथम जानने के लिये कहा है न ?

उत्तर : उन अरहंत के द्रव्य-गुण-पर्याय का लक्ष छोड़कर स्वयं को पहिचाने तो भेदज्ञान हो और तभी उन अरहंत को निमित्त कहा जाये।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

17वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 18 अक्टूबर से मंगलवार 27 अगस्त, 2015 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

समाचार दर्शन -

38वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 'श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट' मुम्बई द्वारा दिनांक 02 से 11 अगस्त 2015 तक 38वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्रीमती रंजनबेन रमेशचंद्र के. दोशी मुम्बई के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी जैन ओसवाल जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ सभी विद्वत्गण मंचासीन थे।

शिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार पर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रात:काल पंचास्तिकाय एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में प्रथम प्रवचन में ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, ब्र. हेमचंदजी हेम, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त मिला।

प्रतिदिन चलने वाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा निमित्त-उपादान, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा छहढाला, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा समयसार (गाथा-73), डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली गई। बाल कक्षा पण्डित अशोकजी उज्जैन द्वारा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन तदुपरान्त आयोजित व्याख्यानमाला में ब्र. हेमचंदजी हेम, पण्डित अनिलजी भिण्ड, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, रजनीभाई दोशी एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढ कक्षाओं में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित जयकुमारजी जैन बारां, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित प्रमोदजी सागर, पण्डित सुरेशजी टीकमगढ, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके **उपरान्त 7.00 बजे से 7.30 बजे तक प्रतिदिन जिनवाणी चैनल पर आने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण होता था।**

रविवार, दिनांक 9 अगस्त को दोपहर 2.30 बजे से श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट की सलाहकार समिति का अधिवेशन संपन्न हुआ, जिसमें ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी ने ट्रस्ट की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन भी प्राप्त हुआ। टोडरमल महाविद्यालय की रिपोर्ट पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने प्रस्तुत की।

शिविर के अवसर पर आत्मानुशासन, मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ : एक अनुशीलन, जीव जीता कर्म हारा, नक्शों में दशकरण, विलक्षण दशलक्षण आदि पुस्तकों एवं अध्यात्म भजन गंगा भाग 2 की सी.डी. का विमोचन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों ने संपन्न कराये।

शिक्षण शिविर के समस्त कार्यक्रम श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं श्री अशोकजी जैन जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुये। ●

नवीन प्रकाशन/शीघ्र मंगायें

अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा जैनधर्म के अत्यंत महत्वपूर्ण एवं वर्तमान में सर्वाधिक चर्चित विषय समाधिमरण के ऊपर लिखी गई नवीनतम कृति 'आगम के आलोक में : समाधिमरण या सल्लेखना' छपकर तैयार है।

इस पुस्तक में सल्लेखना के संदर्भ में आगम के आलोक में डॉ. भारिल्ल द्वारा अनेक क्रांतिकारी विचारणीय बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को मूलत: पठनीय है।

56 पृष्ठीय एवं 9 रुपये मूल्य की यह पुस्तक मात्र 5/- रुपये की कीमत में बिक्री हेतु उपलब्ध है। आप अपने परिचितों/मित्रों को बाँटने हेतु सत्साहित्य विक्रय केन्द्र ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर को अपने ऑर्डर शीघ्र भिजवायें। 1 हजार या अधिक पुस्तकों का ऑर्डर भेजने पर दातार का नाम पुस्तक में छापा जा सकेगा।

ज्ञातव्य है कि इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 25 हजार की संख्या के साथ प्रकाशित हो रहा है, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है।

गुरुवाणी मंथन शिविर संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह में दिनांक 15 से 19 जुलाई तक श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में गुरुवाणी मंथन शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की सुरक्षित वाणी तथा उनके द्वारा उद्घाटित अध्यात्म के उत्कृष्ट रहस्यों का जन-जन में संचार हो, एतदर्थ तत्त्वज्ञान के मर्मज्ञ विद्वानों के सानिध्य में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय बांसवाड़ा एवं आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा में अध्ययनरत शास्त्री वर्ग के छात्रों के साथ उनके स्थानीय प्राध्यापकों एवं अन्य 10 मुमुक्षु संस्थाओं के अध्यापकों को आमंत्रित किया गया।

इस शिविर में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई एवं पण्डित चेतनभाई मेहता के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला। प्रवचनों व कक्षाओं के अन्तर्गत आधा घंटा गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन होता था एवं तत्पश्चात् आमंत्रित विद्वान द्वारा उस पर व्याख्यान किया जाता था। विद्वानों द्वारा गुरुदेवश्री की प्रतिपादन शैली एवं विषय स्पष्टीकरण शैली पर भी प्रकाश डाला गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्वानों द्वारा गुरुदेवश्री के जीवन-दर्शन, दिनचर्या, तत्त्वप्रतिपादन की कला, उनके जीवन की विविध घटनाओं का चित्रण प्रवचनों के माध्यम से किया गया। एक दिन शंका-समाधान के रूप में पण्डित अभयकुमारजी ने गुरुदेवश्री से सम्बन्धित अनेक घटनाओं एवं समाज में चर्चित विविध भ्रांतियों व विसंगतियों को दूर किया।

इस अवसर पर 'गुरुदेव मुझे प्रिय क्यों ?' विषय पर दो दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री हीरालालजी काला भावनगर द्वारा किया गया। अध्यक्षता दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ के अध्यक्ष श्री हंसमुखभाई वोरा एवं ध्वजारोहण श्री विपिनभाई बाधर जामनगर ने किया। मुख्य अतिथियों के रूप में श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री अमृतभाई मेहता फतेहपुर, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री आलोकजी कानपुर, श्री बीनूभाई मुम्बई, श्री अशोकजी जबलपुर, श्री अजितजी बड़ौदा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

उपर्युक्त विद्वानों एवं अतिथियों के अतिरिक्त शिविर में देश के विभिन्न स्थानों में संचालित

मुमुक्षु संस्थाओं के प्रतिनिधि विद्वानों में जयपुर से पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित उदयजी चौगुले, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री; बांसवाड़ा से पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, पण्डित चैतन्यजी शास्त्री; कोटा से पण्डित रतनचंदजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित राहुलजी शास्त्री; सोनगढ से पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित आतमजी शास्त्री; द्रोणगिरि से पण्डित शुभमजी शास्त्री; नागपुर से पण्डित भूषणजी शास्त्री; सोनागिर से पण्डित स्वतंत्रभूषणजी शास्त्री; चैतन्यधाम से पण्डित सचिनजी शास्त्री; खनियांधाना से पण्डित विकासजी शास्त्री; सन्मति संस्कार कोटा से पण्डित जयकुमारजी, पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित अमितजी शास्त्री; दिल्ली से विदुषी राजकुमारीजी एवं उदयपुर से विदुषी ममताजी जैन का समागम प्राप्त हुआ।

शिविर में शास्त्री कक्षा में अध्ययनरत 151 छात्रों ने भाग लिया तथा शिविर के दौरान उनके अध्ययन में शामिल पाठ्यक्रम के आधार पर परीक्षा भी ली गई।

अंतिम दिन अनेक श्रेष्ठीजनों व विद्वानों की उपस्थिति में समापन समारोह हुआ, जिसमें जयपुर से अच्युतकांत जैन, चर्चित जैन व निकुंज जैन; बांसवाड़ा से दीपक जैन ने तथा कोटा से प्रासुक जैन ने शिविर सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये। सभी छात्रों ने शिविर की जमकर प्रशंसा की तथा प्रतिवर्ष ऐसा शिविर लगने की भावना व्यक्त की। तीनों शास्त्री महाविद्यालयों की ओर से पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने दोनों आयोजक ट्रस्टों का आभार व्यक्त किया।

सभा के संचालक व शिविर के संयोजक पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर थे। अन्त में श्री महीपालजी ज्ञायक ने शिविर की उपलब्धियाँ बताते हुए समस्त विद्वानों, श्रेष्ठियों एवं शास्त्री विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।

शिविर के पश्चात् टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों ने अपने अध्यापकों के साथ सिद्धक्षेत्र पालीताणा, गुरुदेवश्री की जन्मभूमि उमराला एवं चैतन्यधाम की यात्रा का भी लाभ लिया।●

निबंध लिखकर भेजें

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप वर्धमान कोटा के तत्त्वावधान में **धर्म व समाज से विमुख होता युवा : कारण व निवारण** विषय पर अधिकतम 250-300 शब्दों में निबंध लिखकर भेजें। निबंध के साथ अपना पूरा पता व फोन नं. अवश्य लिखें। अन्तिम तिथि -30 सितम्बर 2015

निबंध भेजने का पता – अशोक कुमार जैन हरसौरा C/o सीमा आईसक्रीम पार्लर (दिनेश गैस एजेन्सी के पास), 1-ट-13, विज्ञान नगर, कोटा (राज.) फोन नं. 0744-2422227, 9462311767, मो.- 9414175123; कैलाशचंद जैन पटवारी, बी-521, इन्द्रा विहार, कोटा (राज.) फोन नं. 0744-2428438 मो.-9829120913, 7568937499

टोडरमल महाविद्यालय के छात्र पुरस्कृत

जयपुर (राज.) : सोनगढ (गुज.) में दिनांक 15 से 19 जुलाई तक हुये गुरुवाणी मंथन शिविर के दौरान हुई परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ है, जिसमें टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों ने शानदार प्रदर्शन करते हुये अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। परीक्षा परिणाम निम्नानुसार है –

शास्त्री प्रथमवर्ष – प्रशांत जैन जयपुर (प्रथम स्थान), विकेश जैन जयपुर (द्वितीय स्थान) एवं अंकित जैन जयपुर व शिखर जैन बांसवाड़ा (तृतीय स्थान)।

शास्त्री द्वितीयवर्ष – ऋषभ जैन जयपुर (प्रथम स्थान), अर्पित जैन जयपुर (द्वितीय स्थान) एवं चेतन जैन कोटा (तृतीय स्थान)।

शास्त्री तृतीयवर्ष – अंकित जैन जयपुर (प्रथम स्थान), अच्युतकांत जैन जयपुर (द्वितीय स्थान) एवं सौरभ जैन जयपुर (तृतीय स्थान)। **–जिनकुमार शास्त्री**

आगामी कार्यक्रम...

(1) गढाकोटा-सागर (म.प्र.) में गढाकोटा, सागर एवं जबलपुर मुमुक्षु मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 25 से 30 दिसम्बर 2015 तक श्री 1008 नेमिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में आयोजित होगा।

इसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिलेगा। अत: आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। आप कितने सदस्यों के साथ पधार रहे हैं, इसकी पूर्व सूचना अवश्य देवें ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था हो सके।

संपर्क सूत्र :– श्री महावीर कुंदकुंद कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट गढाकोटा, ज्ञानचंद अठभैया-09300343911, पण्डित सचिन्द्र शास्त्री-07047332594

(2) देवलाली-नासिक (महा.) में कार्तिक माह की अष्टाह्निका के अवसर पर दिनांक 18 से 25 नवम्बर 2015 तक **'चारों ही अनुयोग से वीतरागता (सम्यग्दर्शन) की प्राप्ति'** विषय पर **MONA (मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका)** के तत्त्वावधान में शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, ब्र. हेमचंदजी देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित चेतनभाई मेहता जयपुर का लाभ प्राप्त होगा। **सौजन्य :–** डॉ. सुशीलाबेन नवीनभाई लक्ष्मीचंद तेजाणी एवं मातुश्री रतनबेन लालजीभाई शाह परिवार। **शिविर में पधारकर अवश्य लाभ लें।**

हार्दिक बधाई !

टीकमगढ (म.प्र.) निवासी पण्डित सुरेशचंदजी जैन पिपरावाले के सुपौत्र एवं श्री समकित जैन के सुपुत्र **चि. शुभ जैन** के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय ध्रुवफण्ड हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

शोक समाचार

(1) खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्री गेंदालालजी पुजारी का दिनांक 1 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता थे एवं नंदीश्वर विद्यालय से अत्यंत स्नेह रखते थे।

(2) मुम्बई निवासी श्रीमती अमृतबेन धर्मपत्नी श्री वेलजीभाई रायशी शाह का दिनांक 15 जुलाई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री दिलीपभाई शाह की माताजी हैं। आप जब भी जयपुर रहती थीं तो यहाँ स्वाध्याय सभा की नियमित श्रोता थीं। आपका टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रति अपूर्व स्नेह रहता था।

(3) प्रतापगढ (राज.) निवासी श्री महेन्द्र कुमारजी पाडलिया का दिनांक 28 मई को 79 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों से देहावसान हो गया।

आप श्रेष्ठदानवीर, तत्त्वरसिक होने के साथ ही प्रतापगढ मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता थे। आपके देहावसान से मुमुक्षु मण्डल को अपूरणीय क्षति हुई है। आपने जीवित रहते हुए ही 25 हजार रूपये की राशि टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्रदान की; एतदर्थ धन्यवाद।

(4) टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री 'दाऊ' जयपुर के पिताजी **श्री प्रेमचंदजी जैन** का दिनांक 11 जुलाई को शांत परिणामोंपूर्वक अपने निजगृह अछरौनी (म.प्र.) में देहावसान हो गया। आप नित्य स्वाध्यायी, गहरे तत्त्वाभ्यासी मुमुक्षु थे। आपने अनेक पद्यात्मक रचनायें एवं सम्यक्त्व लीला, अकलंक-निकलंक, रामदर्शन आदि नाटकों की रचना की थी। आपकी स्मृति में संस्था को 500/- रुपये प्राप्त हुये।

(5) वीतराग-विज्ञान के सह-सम्पादक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के बड़े पापाजी **श्री बुद्धिप्रकाशजी गोधा** का दिनांक 9 अगस्त को 90 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में आपका विशिष्ट योगदान रहता था। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

9 से 16 सितम्बर	मुम्बई (भारतीय विद्या भवन)	श्वेताम्बर पर्यूषण
18 से 29 सितम्बर	दिल्ली (विश्वासनगर)	दशलक्षणपर्व
2 अक्टूबर	जयपुर (टोडरमलजी मंदिर)	ताम्रपत्र-मोक्षमार्गप्रकाशक विमोचन
18 से 27 अक्टूबर	जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन)	शिक्षण शिविर
31 अक्टू. व 1 नव.	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
8 से 12 नवम्बर	देवलाली-नासिक (महा.)	भ.महावीर निर्वाणोत्सव
18 से 25 नवम्बर	जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन)	सिद्धचक्र मण्डल विधान
25 से 30 दिसम्बर	गढाकोटा (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा

कन्या महाविद्यालय का उद्घाटन संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा देश के सर्वप्रथम जैनदर्शन कन्या महाविद्यालय का शुभारम्भ दिनांक 25 व 26 जुलाई को द्विदिवसीय कार्यक्रम के साथ हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के साथ तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर, विदुषी राजकुमारी जैन दिल्ली एवं डॉ. स्वर्णलता जैन नागपुर द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 25 जुलाई को रात्रि में डॉ. भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर की अध्यक्षता में श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, विदुषी राजकुमारी जैन, श्रीमती बीना लुहाड़िया, श्रीमती श्रुति शास्त्री, श्रीमती सरोजबेन, श्रीमती अरुणाबेन, श्रीमती शिरोमणि जैन, श्रीमती रश्मि जैन, डॉ. कल्पना जैन, डॉ. किरण जैन, डॉ. निर्मला बैनाड़ा, डॉ. सीमा जैन, श्रीमती यशोधरा जैन, सुश्री पूजा जैन, श्रीमती संगीता पेठकर इत्यादि देश की प्रमुख 16 विदुषियों का सम्मान किया गया। साथ ही तत्त्वज्ञान व श्रावकाचार के संस्कारों की आवश्यकता विषय पर सभी विदुषियों का उद्बोधन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. ममता जैन ने किया।

दिनांक 26 जुलाई को कन्या महाविद्यालय के उद्घाटन का कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

देश के विभिन्न नगरों से आये हुये लगभग 700 साधर्मियों के मध्य जब डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने देश के सर्वप्रथम जैनदर्शन कन्या महाविद्यालय के उद्घाटन की घोषणा की, तब संपूर्ण मण्डप करतल ध्वनि से गूंज उठा।

कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

ज्ञातव्य है कि शास्त्री अध्ययन हेतु बालकों के लिये 3 महाविद्यालय हैं, परन्तु कन्या महाविद्यालय नहीं है। अत: इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु यह महाविद्यालय प्रारम्भ किया गया है। इस वर्ष 13 बालिकाओं को प्रवेश दिया गया है, जो 5 वर्ष तक संस्कृत मीडियम में जैनदर्शन के साथ अन्य विषयों (हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत) का अध्ययन करके जगत्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर से शास्त्री की डिग्री प्राप्त करेंगी।

नि:शुल्क साहित्य प्राप्त करें

सभी प्रकार के दिगम्बर जैन ग्रन्थ नि:शुल्क (डाकखर्च सहित) प्राप्ति हेतु **संपर्क करें**- अमित जैन C/o DTDC कोरियर, 3312, लाल गली, दिल्ली गेट, दरियागंज, दिल्ली-110002 मोबा. नं.- 09811393356

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 18 सितम्बर 2015 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 27 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 21 अगस्त 2015 तक हमारे पास 410 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 21 अगस्त 2015 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 391 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वान : 1. कोटा :बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, 2. **दिल्ली (विश्वास नगर)** : डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, 3. **जयपुर :** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, 4. **मुम्बई (बोरीवली) :** डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, 5. **जयपुर :** ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर, 6. **सोनागिर** : पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन, विदिशा, 7. **मुम्बई (भायंदर) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना 8. **बड़ौदा** : पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन, 9. **दिल्ली व विभिन्न स्थान** : ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद, 10. **कलकत्ता** : पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर, 11. **सागर (परकोटा)** : पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, 12. **उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल)** : ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, 13. **इन्दौर (रामाशाह मन्दिर) :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील शास्त्री जयपुर, 14. **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, 15. **हिम्मतनगर** : पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा, 16. **इन्दौर (साधनानगर)** : पण्डित शैलेशभाई शाह, तलौद, 17. **दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट)** : पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर, 18. **सासनी** : पण्डित अशोकजी लुहाड़िया शास्त्री मंगलायतन, 19. **राजकोट** : पण्डित सुनीलजी जैनापुरे शास्त्री राजकोट 20. **बैंगलोर :** पण्डित पीयूष कुमारजी शास्त्री, जयपुर, 21. **कोटा (इन्द्रा विहार)** : पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड, 22. **ग्वालियर** : ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल ललितपुर, 23. **हरदा :** ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली, 24. **अजमेर (स्वाध्याय मन्दिर)** : डॉ. दीपकजी जैन, जयपुर।

विदेश : 1. **शिकागो (अमेरिका)** : पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, 2. **टोरंटो (कनाडा)** : डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर, 3. **नैरोबी** : पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, 4. **दुबई :** डॉ. नीतेशजी शाह, जयपुर।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. **अशोकनगर :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, 2. **जबलपुर :** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री नागपुर, 3. **इन्दौर (साधनानगर) :** पण्डित शैलेषभाई तलौद, 4. **इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, 5. **इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर, 6. **इन्दौर (ओम विहार) :** पण्डित सतीशचन्दजी कासलीवाल देवास, 7. **इन्दौर (रामचन्द्र नगर) :** पण्डित अरुणजी ठगन टीकमगढ़, 8. **इन्दौर (गोयल नगर) :** पण्डित अरुणजी मोदी सागर, 9. **इन्दौर :** पण्डित पदमचंदजी गंगवाल, 10. **भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित सुरेशचन्दजी जैन टीकमगढ़, 11. **लुकवासा :** ब्र. कल्पनाबेन सागर, 12. **बीना :** पण्डित चन्दूभाई कुशलगढ़, 13. **रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय) :** पण्डित संजयकुमारजी इंजी. खनियांधाना, 14. **बड़नगर :** पण्डित ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, 15. **उज्जैन :** डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, 16. **गुना (वीतराग-विज्ञान) :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, 17. **भोपाल (चौक) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, 18. **भिण्ड (परमागम मन्दिर) :** पण्डित अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 19. **टीकमगढ़ :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, 20. 21. **ग्वालियर (फालका बाजार) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, 22. **ग्वालियर(दानाओली) :** ब्र. कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, 23. **गढ़ाकोटा :** विदुषी श्रीमती पुष्पा जैन खण्डवा, 24. **सागर (महावीर जिनालय) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, 25. **बेगमगंज :** पण्डित रमनजी शास्त्री मौ, 26. **खुरई :** पण्डित रतनचन्दजी कोटा, 27. **होशंगाबाद :** ब्र. सुधाबेन छिन्दवाड़ा, 28. **खनियांधाना :** पण्डित मनोजजी जबलपुर, 29. **भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित धीरज शास्त्री जबेरा, 30. **सिलवानी :** पण्डित सजल शास्त्री सिंगोडी, 31. **बण्डा :** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, 32. **सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, 33. **जबेरा :** पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा इन्दौर, 34. **भोपाल (कस्तूरबानगर) :** डॉ. महेशजी शास्त्री गूढ़ा, 35. **गुना (महावीर जिनालय) :** पण्डित विवेकजी जैन रानीपुर, 36. **अमरमऊ :** पण्डित दीपेशजी शास्त्री जयपुर, 37. **सागर :** पण्डित अखिलेशजी शास्त्री, 38. **मौ :** पण्डित अजितकुमारजी जैन मडावरा सागर, 39. **शहडोल :** पण्डित प्रतीक शास्त्री जबलपुर, 40. **टीकमगढ :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, 41. **छिन्दवाड़ा :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, 42. **शाहगढ़ :** पण्डित नागेशजी पिड़ावा, 43. **सागर (तारण-तरण) :** पण्डित रमेशजी मंगल सोनगढ, 44. **सेमरखेड़ी :** पण्डित हेमचंदजी शास्त्री शाहगढ, 45. **शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, 46. **मन्दसौर (नई आबादी) :** पण्डित अश्विन नानावाटी, 47. **गंजबसौदा (तारण-तरण) :** पण्डित प्रदीपकुमारजी कुंडा, 48. **मन्दसौर (कालाखेत) :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, 49. **गौरझामर :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री कोटा, 50. **रांझी (जबलपुर) :** पण्डित सुकुमालजी शास्त्री लुकवासा, 51. **आरोन :** पण्डित अभिषेक मंगलार्थी छिन्दवाड़ा, 52. **मकरोनिया (सागर) :** डॉ. कपूरचन्दजी कौशल भोपाल, 53. **सिवनी :** पण्डित जिनेश शेठ मुम्बई, 54. **ग्वालियर (थाठीपुर) :** पण्डित अभिषेक शास्त्री कोलारस, 55. **धार :** पण्डित प्रमोदजी मकरोनिया सागर, 56. **फोपनार :** पण्डित विनीत शास्त्री पौहरी, 57. **निसईजी :** पण्डित वीकेश शास्त्री जयपुर, 58. **निसईजी :** पण्डित रतनलालजी होशंगाबाद, 59. **निसईजी :** पण्डित राजकुमारजी सराफ सागर, 60. **निसईजी :** विदुषी पुष्पाबेन होशंगाबाद, 61. **निसईजी :** विदुषी प्रतिभाजी बांदा, 62. **करेली :** पण्डित सुरेन्द्रजी उज्जैन इन्दौर, 63. **बदनावर (धार) :** पण्डित प्रमोदजी बांसवाड़ा, 64. **सनावद (समवशरण मन्दिर) :** पण्डित सुनीलजी जैन देवरी, 65. **इटारसी (तारण-तरण) :** पण्डित चितरंजनजी जैन छिन्दवाड़ा, 66. **शहपुरा भिटौनी :** पण्डित पुष्पेन्द्रजी शास्त्री कोटा, 67. **सिंरोज :** पण्डित शेषकुमारजी जैन उभेगांव, 68. **मंडला :** पण्डित पण्डित राजेशकुमारजी जबलपुर, 69. **दमौह (कांच मन्दिर) :** पण्डित धन्यकुमारजी जैन, 70. **दमोह (तारण-तरण) :** पण्डित समकित शास्त्री सिलवानी, 71. **केसली :** पण्डित कमलकुमारजी जबेरा, 72. **खड़ैरी :** पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा, 73. **विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, 74. **विदिशा (सीमंधर जिनालय)**

: पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, 75. **सोनागिर :** पण्डित लालजीरामजी विदिशा, 76. **बदरवास :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री ललितपुर, 77. **कोलारस (चौधरी मौहल्ला) :** पण्डित कीर्तिकुमार शास्त्री जयपुर, 78. **कोलारस (आदिनाथ) :** पण्डित नितुलजी शास्त्री इन्दौर, 79. **करैरा :** पण्डित अमितजी शास्त्री शाहगढ, 80. **वनखेड़ी :** पण्डित निकुंजजी शास्त्री खड़ैरी, 81. **शुजालपुर सिटी :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री उदयपुर, 82. **रहली :** पण्डित प्रीतिंकरजी शास्त्री ललितपुर, 83. **धर्मपुरी :** पण्डित सुशीलजी शास्त्री भोपाल, 84. **सिंगोड़ी :** पण्डित आकाशजी शास्त्री टड़ा, 85. **अमलाई :** पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री सादपुर, 86. **उमरिया :** पण्डित आदित्यजी शास्त्री कोटा, 87. **उभेगांव :** पण्डित अनिकेतजी शास्त्री मौ, 88.89. **जावरा :** ब्र.धरणेन्द्रजी दिल्ली एवं पण्डित विनयजी शास्त्री दिल्ली, 90. **घुवारा :** पण्डित नीलेशजी शास्त्री ध्रुवधाम, 91.92. **सागर (तारण-तरण) :** पण्डित कपूरचंदजी भायजी एवं पण्डित सुधीर सहयोगी, 93. **जुन्नारदेव :** पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन, 94. **मंदसौर (नई आ.) :** पण्डित संदीपजी शास्त्री, 95. **बदरवास :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री, 96. **बण्डा :** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, 97. **नरवर :** पण्डित शुभमजी शास्त्री गौरझामर, 98. **छिन्दवाड़ा (गांधीगंज) :** पण्डित सौरभजी शाह शास्त्री, 99. **शुजालपुर मण्डी :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, 100. **शहपुरा भिटौनी (बालकक्षा) :** पण्डित अंकित शास्त्री बण्डा, 101.102. **सोनागिर :** पण्डित लालजीरामजी विदिशा व पण्डित मधुकरजी जलगांव, 103. **सागर (तारण-तरण) :** पण्डित बाहुबलीजी शास्त्री दमोह, 104. **अम्बाह :** पण्डित दीपकजी शास्त्री केसली, 105. **इन्दौर (माणकचौक) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी, 106. **विदिशा (किलाअन्दर) :** पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, 107. **ग्वालियर (सोड़ा का कुआ) :** पण्डित फूलचंदजी हिंगोली, 108. **मगरौन :** पण्डित शुभमजी शास्त्री मड़ावरा, 109. **बीड :** पण्डित आकाशजी शास्त्री कोटा, 110. **कुचड़ौद :** पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री अमरोहा, 111.112. **राघौगढ :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर व पण्डित प्रबलजी शास्त्री बड़ामलहरा, 113.114. **द्रोणगिरि :** पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली व ब्र.महेन्द्रजी शास्त्री अमायन, 115. **सागर (बालकव्यू) :** पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, 116. **सागर (मकरोनिया) :** पण्डित शुभमजी शास्त्री भिण्ड, 117. **हरदा :** ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली, 118. **बेगमगंज (तारण-तरण) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री सिलवानी, 119. **इन्दौर :** विदुषी प्रतीति शास्त्री, 120. **लुकवासा :** पण्डित विजयजी शास्त्री जयपुर, 121. **दलपतपुर :** पण्डित चर्चितजी शास्त्री खनियांधाना, 122. **भानगढ :** पण्डित शुभांशुजी शास्त्री कोटा, 123. **बाकानेर :** पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी, 124. **महिदपुर :** पण्डित विकासजी शास्त्री मौ, 125. **चांदामेटा :** पण्डित वैभवजी शास्त्री गोरमी, 126. **कटनी :** पण्डित निवेशजी शास्त्री खरगापुर, 127. **पंधाना :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री बंडा, 128. **खिरकिया :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री ललितपुर, 129. **पथरिया :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड, 130. **धामनौद :** पण्डित वैभवजी शास्त्री भिण्ड, 131. **करहिया :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. **मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित मनीषजी शास्त्री (बरेली) इन्दौर, 2. **मुम्बई (दादर) :** पण्डित संजयजी शास्त्री (जेवर) मंगलायतन, 3. **मुम्बई (बोरीवली) :** डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, 4. **मुम्बई (भायंदर-वेस्ट) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना, 5. **मुम्बई (मलाड) :**

पण्डित सचिनजी अकलूजवाले मंगलायतन, 6. **मुम्बई (वसई रोड) :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट, 7. **मुम्बई (एवरशाईनगर) :** पण्डित सोनू शास्त्री अहमदाबाद, 8. **मुम्बई (विक्रोली) :** पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, 9. **मुम्बई (दहिसर) :** पण्डित प्रफुल्लजी शास्त्री शेंडगे, 10.11. **मुम्बई (घाटकोपर) :** डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी गुढाचन्द्रजी एवं पण्डित सौरभ शास्त्री कोटा, 12. **मुम्बई (कांदीवली) :** पण्डित अंकितजी शास्त्री खनियांधाना, 13. **मुम्बई (बोरीवली-विधान) :** पण्डित सम्मेदजी शास्त्री टीकमगढ, 14. **मुम्बई (भायंदर-वेस्ट) :** ब्र. रविजी ललितपुर, 15. **वाशी (नवी मुम्बई) :** पण्डित जितेन्द्र दोशी मुम्बई, 16-19. **नागपुर (इतवारी) :** ब्र. वासन्तीबेन, ब्र. प्रीती बहन, ब्र. सीमा बहन, ब्र. श्रद्धाबहन देवलाली, 20-22. **नागपुर (विद्यालय) :** पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित भूषणजी शास्त्री विटालकर, **(विधान हेतु) :** पण्डित नितिनजी शास्त्री झालरापाटन, 23.24. **गजपंथा :** डॉ. मानमलजी जैन कोटा एवं पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री कोटा, 25.26. **पुणे (स्वा. मंडल) :** पण्डित विकास शास्त्री बानपुर एवं विदुषी अनुभूति जैन बानपुर, 27. **जलगांव :** पण्डित कमलेशजी शास्त्री मौ, 28.29. **हिंगोली :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित अमोलजी शास्त्री संघई, 30. **वाशिम (जवाहर कालोनी) :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, 31. **देवलाली :** ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, 32-34. **सेलू :** पण्डित अनिल धवल शास्त्री भोपाल, पण्डित अनंतजी शास्त्री शिरपुर एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री वानरे, 35.36. **औरंगाबाद :** डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई एवं पण्डित संजयजी शास्त्री राउत, 37.38. **देऊलगाँवराजा :** पण्डित विजयकुमारजी रिठद एवं पण्डित विजयजी शास्त्री आव्हाने, 39. **मलकापुर :** पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन, 40.41. **नातेपुते :** पण्डित नन्दकिशोर शास्त्री काटोल एवं पण्डित शीतलजी दोशी, 42. **अकोला :** पण्डित सुदीपजी इंजीनियर बीना, 43. **औरंगाबाद (गारखेड़ा) :** पण्डित गुलाबचन्दजी बेलोकर शास्त्री एलोरा, 44-46. **सांगली :** पण्डित अनिल शास्त्री खनियांधाना, विदुषी स्वयंप्रभा पाटील एवं पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, 47. **सोलापुर (आदिनाथ मन्दिर) :** पण्डित जयकुमारजी कोटा, 48. **कारंजा :** ब्र. अमित भैया विदिशा, 49. **बेलोरा :** पण्डित सागरजी शास्त्री ध्रुवधाम, 50. **शिरपुर :** पण्डित शुभमजी शास्त्री कोटा, 51. **बाहुबली कुंभोज :** डॉ. नेमीनाथजी शास्त्री दानोली, 52. **अनसिंग :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री भिण्ड, 53. **बालचन्द नगर :** पण्डित सागरजी शास्त्री जयपुर, 54. **परली (वैजनाथ) :** पण्डित पंकजजी शास्त्री जयपुर, 55. **शिरडशहापुर :** पण्डित सुरेशजी शास्त्री राजुरा, 56. **विहीगांव :** पण्डित अभिषेकजी उपाध्ये जयपुर, 57. **डासाला :** पण्डित रिमांशुजी शास्त्री जयपुर, 58. **सेनगांव :** पण्डित गौरवजी शास्त्री उखलकर, 59. **रिसोड :** पण्डित रोहनजी घाटे, 60. **बड़ौत तांगड़ा :** पण्डित वर्धमानजी देशमाने, 61. **मालशिरस :** पण्डित प्रशांतजी शास्त्री पाटील, 62. **देवलाली (विधान) :** पण्डित दीपकजी 'धवल' भोपाल, 63-65. **कारंजा (गुरुकुल) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित चिन्तामणि शास्त्री औरंगाबाद एवं पण्डित सतीशजी शास्त्री गव्हारे, 66. **फालेगांव :** पण्डित विनयजी शास्त्री हटा, 67. **कोल्हापुर :** पण्डित दिलीपजी महाजन मालेगांव, 68. **कलम्ब :** पण्डित संदेशजी शास्त्री जयपुर, 69. **वरुड :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री औरंगाबाद, 70. **रामटेक :** पण्डित कार्तिक शास्त्री जयपुर, 71. **चिखली :** पण्डित विनीतजी शास्त्री हटा, 72. **मालेगांव :** पण्डित प्रमेशजी शास्त्री मुम्बई, 73. **शेलुद :** पण्डित सौरभजी दुरुगकर शास्त्री।

राजस्थान प्रान्त

1. कोटा : बाबू जुगल किशोरजी 'युगल' कोटा, **2. जयपुर :** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, **3. जयपुर :** ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर, **4. जयपुर (आदर्शनगर) :** पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, **5. कोटा (रामपुरा) :** पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, **6. कोटा (इन्द्र विहार) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, **7.8. कोटा (छावनी) :** पण्डित प्रेमचंदजी बजाज कोटा, पण्डित निलयजी शास्त्री बरायठा, **9. कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पण्डित पंकजजी शास्त्री बमनी, **10.11. अलवर (मु. मंडल) :** पण्डित निर्मलजी एडवोकेट एटा एवं **(विधान हेतु) :** पण्डित विपिनजी जैन बांसवाड़ा, **12. पिडावा :** पण्डित निर्मलकुमारजी सागर, **13. उदयपुर (मु. मंडल) :** ब्र. हेमचन्दजी हेम देवलाली, **14. उदयपुर (सेक्टर-11) :** पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, **15. उदयपुर (नेमीनगर) :** पण्डित राहुल शास्त्री मुम्बई, **16. उदयपुर (गायरीयावास) :** पण्डित नेमीचन्दजी जैन ग्वालियर, **17. उदयपुर (केशवनगर) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री अमरकोट, **18. उदयपुर (सेक्टर-14) :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री गुढ़ाचन्द्रजी, **19.20. भीलवाड़ा :** पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री निम्बाहेड़ा एवं पण्डित मयंकजी जैन कोटा, **21. कानोड :** पण्डित संदीपजी शास्त्री शाहपुर, **22. भीण्डर :** पण्डित धर्मचन्दजी जैन जयथल, **23. बिजौलिया :** पण्डित महेशचन्दजी जैन ग्वालियर, **24.25. पीसांगन :** पण्डित पूरणचन्दजी जैन मौ, **(विधान हेतु) :** पण्डित मोहितजी जैन बंडा कोटा, **26. बीकानेर :** पण्डित राजीवजी शास्त्री थानागाजी, **27. झालरापाटन :** ब्र. विमला बहनजी जयपुर, **28. अजमेर (वी.विज्ञान भवन) :** डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर, **29. अजमेर (वैशालीनगर) :** पण्डित निखिलजी शास्त्री मेरठ, **30. अजमेर (विधान हेतु) :** पण्डित अभयजी शास्त्री ग्वालियर, **31. बून्दी (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित मनोजकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर, **32. चित्तौड़गढ़ (कुम्भानगर) :** पण्डित विमलचन्दजी जैन लाखेरी, **33. साकरोदा :** पण्डित दीपकजी जैन बांसवाड़ा, **34. लाम्बाखोह :** पण्डित श्रीपालजी घाटोल, **35. लकड़वास :** पण्डित संयमजी जैन कोटा, **36. बोहेडा :** पण्डित शुभम सावरकर शास्त्री बांसवाड़ा, **37. वल्लभनगर :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर, **38. कूण :** पण्डित वर्धमान जैन कोटा, **39. डबोक :** पण्डित विपुलजी जैन बांसवाड़ा, **40. लवाण :** पण्डित पदमचन्दजी जैन कोटा, **41. कुशलगढ (शान्तिनाथ) :** पण्डित संभवजी जैन कोटा, **42. वेर :** पण्डित तन्मयजी जैन बांसवाड़ा, **43. बेगू :** पण्डित अविरल जैन बांसवाड़ा, **44. झालावाड़ :** पण्डित अनुभवजी जैन कोटा, **45.46. केलवाड़ा :** पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं अनुभवजी शास्त्री कोटा, **47. बांसवाड़ा :** पण्डित विनोदजी सिंघई जबेरा, **48.49. बांसवाड़ा (ध्रुवधाम) :** पण्डित प्रशांतजी शास्त्री अमरमऊ एवं पण्डित चेतनजी शास्त्री शहपुरा, **50. थानागाजी :** पण्डित पारसजी जैन बांसवाड़ा, **51. लूणदा :** पण्डित शुभमजी जैन कोटा, **52. सेमारी :** पण्डित सौरभजी जैन कोटा, **53. कुशलगढ (तेरापंथी) :** पण्डित प्रासुकजी जैन कोटा, **54. टोकर :** पण्डित अमितजी जैन कोटा, **55. देवली (आदिनाथ जिनालय) :** पण्डित संचितजी शास्त्री, **56. देवली (चन्द्रप्रभ) :** पण्डित सतेन्द्रजी शास्त्री, **57.58. रावतभाटा :** पण्डित विशालजी शास्त्री व पण्डित अंकुशजी शास्त्री, **59. अलवर :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, **60. भीलवाड़ा :** पण्डित मयंकजी शास्त्री कोटा, **61. जयपुर (जगतपुरा) :** पण्डित अरुणजी शास्त्री बंड, **62.63.**

अलवर : पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री भौंती एवं पण्डित अजितजी शास्त्री फुटेरा, **64. किशनगढ :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री हीरापुर, **65. जयथल :** पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, **66. झालरापाटन :** पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1. अलीगढ़ (मंगलायतन) : पण्डित चेतनभाई राजकोट, **2. मैनपुरी :** पण्डित सुधीरजी मंगलायतन, **3. खतौली (चन्द्रप्रभ जिनालय) :** पण्डित चैतन्य शास्त्री कोटा, **4. ललितपुर :** पण्डित मनोजकुमारजी जैन जबलपुर, **5. मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित डॉ. मनीष शास्त्री खतौली, **6. मडावरा :** पण्डित सतीशचन्दजी जैन पिपरई, **7. जैतपुरकला :** पण्डित संजयजी शास्त्री खनियांधाना, **8. शिकोहाबाद :** विदुषी ब्र. संध्याबेन, **9. धामपुर :** पण्डित सौरभजी शास्त्री खडेरी, **10. कांधला :** पण्डित सौरभजी फूप, **11. सहारनपुर :** विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली, **12. एतमादपुर :** पण्डित संतोषजी शास्त्री परभणी, **13. जसवंतनगर :** पण्डित राहुलजी जैन रानीपुर, **14. रुडकी :** पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड, **15. कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित साकेत शास्त्री जयपुर, **16. छपरौली :** पण्डित माणिकचन्दजी जैन बेरी, **17. खेकड़ा :** विदुषी प्रमिलाजी जैन इन्दौर, **18. शिकोहाबाद :** ब्र. अंकित शास्त्री धार, **19. शिकोहाबाद :** पण्डित मयंकजी शास्त्री, **20. बानपुर :** ब्र. चंद्रेशजी अमायन, **21. कुरावली :** पण्डित शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **22. कानपुर (किदवई नगर) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री जबलपुर, **23. सुल्तानपुर (सहारनपुर) :** पण्डित आदित्यजी जैन कोटा, **24. कांधला :** पण्डित विशालजी ग्वालियर, **25. अफजलगढ :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री धामपुर, **26. भोगांव :** पण्डित विकासजी शास्त्री इन्दौर, **27. करहल :** पण्डित मनीषजी शास्त्री भिण्ड, **28. सहारनपुर :** पण्डित प्रतीकजी शास्त्री मौ, **29. कुरावली :** पण्डित नमनजी शास्त्री खनियांधाना, **30. खेकड़ा :** पण्डित यशजी शास्त्री पिड़ावा।

गुजरात प्रान्त

1. अहमदाबाद (वस्त्रापुर) : पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, **2. अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा, **3. अहमदाबाद (मणीनगर) :** पण्डित निखिलजी जैन भायन्दर, **4. अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित अंकुर शास्त्री देहगांव, **5. अहमदाबाद (ओढव) :** पण्डित शनिजी शास्त्री कोटा, **6. अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित संजयजी शास्त्री गनोड़ा, **7. अहमदाबाद (नरौडा) :** पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, **8. अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित सुमित शास्त्री छिन्दवाड़ा, **9. अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, **10. अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित सचिनजी शास्त्री गढ़ी, **11. अहमदाबाद (सम्राटनगर) :** डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, **12. अहमदाबाद (महावीर नगर):** पण्डित मंथनजी गाला शास्त्री, **13. अहमदाबाद (बहिरामपुरा) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री बकस्वाहा, **14. हिम्मतनगर :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, **15. राजकोट :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, **16. रखियाल :** विदूषी ब्र. पुष्पलता झांझरी उज्जैन, **17. तलोद :** ब्र. ज्ञानधारा एवं समता झांझरी उज्जैन, **18. मोरबी :** पण्डित राजेशजी शेठ मुम्बई, **19. वापी :** डॉ. श्रेयांसजी जबलपुर, **20. जैतपुर :** पण्डित प्रमोदजी शास्त्री जौलाना, **21. जहेर :** पण्डित गौरवजी शास्त्री भिण्ड, **22. दाहोद :** पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, **23. राजकोट :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे,

24. **भावनगर :** पण्डित दीपकजी वस्त्रापुर अहमदाबाद, 25. **जामनगर :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, 26. **सूरत :** पण्डित ज्ञाता झांझरी उज्जैन, 27.28. **बड़ौदा :** पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन एवं पण्डित सहजजी झांझरी उज्जैन, 29. **बड़ौदा (गोटाद) :** ब्र. प्रवीणजी देवलाली।

अन्य प्रान्त

1. **कोलकाता :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, 2. **बेलगाँव :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री पालडी, 3. **बैंगलौर :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, 4.5. **दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** पण्डित डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, **(विधान हेतु)** पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन, 6. **कोलकाता (विधान हेतु) :** पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, 7. **कोलकाता (बॅण्डेल चर्च) :** पण्डित मधुरजी शास्त्री जयपुर, 8. **एरनाकुल्लम (केरल) :** पण्डित अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, 9. **सम्मेदशिखर (कुन्दकुन्दनगर) :** पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, 10. **ठाकुरगंज :** पण्डित संजयकुमारजी सेठी जयपुर, 11.12. **फरीदाबाद :** पण्डित दीपकजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित सुमितजी शास्त्री भिण्ड, 13. **दावणगेरे (कर्नाटक) :** पण्डित भरत शास्त्री कोरी, 14. **कलकत्ता :** पण्डित मधुरजी शास्त्री, 15.16. **बेलगांव :** पण्डित वीतरागजी शास्त्री एवं पण्डित अक्षयजी शाम शास्त्री, 17. **खैरागढ :** पण्डित पन्नालालजी देवलाली, 18. **बलौदा बाजार :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री।

दिल्ली प्रान्त

1. **दिल्ली (विश्वास नगर) :** डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, 2. **विश्वास नगर :** पण्डित अनिलजी इंजी. इन्दौर, 3.4. **छतरपुर एक्सटेंशन :** पण्डित डॉ. सुदीपजी जैन एवं डॉ. वीरसागर जैन, 5. **कालकाजी व कृष्णानगर :** डॉ. अशोक जैन गोयल, 6. **सैनिक फार्म :** पण्डित राकेश जैन शास्त्री, 7. **रोहिणी से. 13 :** पण्डित ऋषभ जैन शास्त्री, 8. **मण्टोला पहाडगंज :** पण्डित संदीप जैन शास्त्री, 9. **पाण्डव नगर :** पण्डित डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, 10. **बसंत कुंज :** पण्डित आदित्य शास्त्री खुरई मुम्बई, 11. **सरस्वती विहार :** पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ़, 12. **बहादुरगढ़ :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, 13. **आत्मार्थी ट्रस्ट :** पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन, 14. **खेकड़ा :** पण्डित यश जैन शास्त्री पिड़ावा, 15. **खेकड़ा :** विदूषी ब्र. प्रमिला बहनजी इन्दौर, 16. **खेकड़ा :** पण्डित अविनाश शास्त्री, (छिंदवाडा) सहारनपुर, 17. **शिवाजीपार्क :** पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना, 18. **रामनगर शाहदरा :** पण्डित मधुवन जैन शास्त्री मुजफ्फरनगर, 19. **पटपडगंज गांव :** पण्डित सुमित जैन शास्त्री टीकमगढ़, 20. **शंकर रोड–राजेन्द्र नगर :** पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़ आगरा, 21–38 **दिल्ली :** पण्डित अमित जैन शास्त्री कोटा, पण्डित पीयूष जैन शास्त्री कोटा, पण्डित कैलाशचन्दजी शास्त्री बीकानेर, पण्डित अचल शास्त्री खनियांधाना, पण्डित देवांग गाला शास्त्री मुम्बई, पण्डित नील शास्त्री मुम्बई, पण्डित करण शाह अमहदाबाद (विधान), पण्डित डॉ. अनेकान्त जैन, पण्डित विवेक जैन शास्त्री सागर, पण्डित प्रयंक जैन शास्त्री रहली, पण्डित संजीव जैन उस्मानपुर, पण्डित संजीव जैन शास्त्री बारा, पण्डित दीपेश जैन शास्त्री गुढ़ा, पण्डित विवेक जैन शास्त्री विश्वासनगर, पण्डित अभिषेक जैन शास्त्री पालम, पण्डित श्रेयांस जैन शास्त्री शांति मोहल्ला, पण्डित मयंक जैन शास्त्री विश्वासनगर, विदुषी ईर्या जैन शास्त्री, 39. **फरीदाबाद :** पण्डित सुमित शास्त्री भिण्ड, 40. **फरीदाबाद :** पण्डित दीपकजी शास्त्री भिण्ड।

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में जोधपुर के कारीगरों द्वारा किया जा रहा पत्थर का वर्क

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**